दि० 18/7/03 को D.D. कार्यक्रम (... 52)

सेवामें, दि. 7/6/03

श्री ममोनारायण मीणाजी (आई. पी. एस.)
पुलिस मुख्यालय, जयपुर ।

विषय : दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम "पुलिस-पब्लिक" में व्याप्त नकारात्मक दृष्टिकोण

महोदय,

निवेदन है कि दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर द्वारा प्रत्येक माह के प्रथम एवं तृतीय शुक्रवार को सायं 6:30 बजे प्रसारित होने वाले कार्यक्रम पुलिस-पब्लिक की मैंने दो कड़ियाँ देखी हैं तथा मुझे यह कहते हुए बहुत दुःख है कि कार्यक्रम की शुरूआती कड़ियों में ही पुलिस की नकारात्मक छवि पेश की गई है । क्या यह अच्छा नहीं होता कि एक पक्ष जनता की शिकायतों का तो एक पक्ष पुलिस की विवशता का, एक उदाहरण पुलिस की नाकामी का तो एक उदाहरण पुलिस की सफलता का, एक वक्तव्य पुलिस के विरोध में तो एक वक्तव्य पुलिस के पक्ष भी प्रस्तुत होता तो जनसाधारण को बेहतर सन्देश मिलता ।

निस्संदेह पुलिस से जनता को बहुत अपेक्षाएँ हैं किन्तु क्या समाज में रहते हुए आम नागरिक के कुछ कर्तव्य नहीं हैं ? क्या भारतीय समाज पुलिस की सहायता करता है ? पुलिस को कोसने वाले कृपया इन मुद्दों पर भी गौर करें -

(1) हैलमेट दुपहिया वाहन चालक की सुरक्षा के लिए है । नौजवान हैलमेट नहीं पहनते । पुलिस को देखकर हैलमेट पहन लिया तो क्या वे पुलिस पर अहसान करते हैं ?

(2) सवारियों से ठसाठस भरी मिनी बस या जीप को पुलिस इसलिए रोकती है ताकि दुर्घटना न हो । क्या जनता इसमें सहयोग करती है ?

(3) कहते हैं पुलिस भ्रष्ट है, रिश्वत लेती है । कृपया बताएँ कि लोग रिश्वत क्यों देते हैं ? क्या रिश्वत देना अपराध नहीं है ? दरअसल हम अपने अपराध छुपाने हेतु रिश्वत देते हैं । यदि किसी वाहन चालक का गलती के कारण चालान होता है तो क्यों नहीं वह यह कहता कि "हाँ मेरा चालान काट दीजिए । मैं गलती पर था अतः दण्ड भी भुगतूँगा ।"

(4) एक पुलिसमैन 40 से 45 डिग्री सैल्शियस तापमान पर भरी दुपहरी में प्रदूषण, धूल, धुँआ, धूप तथा शोर में बिना सुस्ताए चौराहे पर ड्यूटी देता है । ऐसे वातावरण में कितने महानुभावों के मुख से प्यार भरे शब्द निकल सकते हैं ? हम पुलिसमैन से देवता होने की अपेक्षा क्यों करते हैं ?

Scanned with OKEN Scanner

§5§ सभी सरकारी कर्मचारियों की छुट्टी की अवधि निश्चित है । पुलिसमैन को निरंतर घंटों कार्य करना पड़ता है । वह थाने में रहता है, अपराधी को ढूंढ़ता है, जेल, अदालत तथा अस्पताल से लेकर वादी-प्रतिवादी के घर सम्मन पहुँचाता है । न समय पर भोजन और न सोना तथा नहाना-धोना तो कई दिन नहीं हो पाता । बताइए वह क्या करे ?

§6§ राजनीतिक पार्टी, मजदूर संगठन, कर्मचारी संघ, व्यापार मण्डल, विद्यार्थी यूनियन, कृषक संघ तथा अन्य संगठन हर तीसरे दिन आन्दोलन करते हैं, रास्ता रोकते हैं, सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाते हैं । ऐसे में पुलिस क्या करे ? भीड़ में रह कर एक अदना सा व्यक्ति भी पुलिस पर पत्थर मारता है । क्यों ? पुलिस का कार्य ही शांति-व्यवस्था बनाए रखना है अतः बल प्रयोग भी करना पड़ता है ।

§7§ सांस्कृतिक विविधता के कारण देश में हर धर्म, सम्प्रदाय, जाति तथा वर्ग के अपने देवी-देवता, त्यौहार तथा तदनुसार शोभायात्रा तथा सार्वजनिक आयोजन होते हैं । पुलिस हर जगह तैनात रहती है । वह अपना वास्तविक कार्य कब करे ?

§8§ शायद ही किसी सार्वजनिक सभा-समारोह स्थल पर मल-मूत्र त्यागने की सुविधा तथा पेयजल उपलब्ध होता है । घंटों तक तैनात पुलिसकर्मी क्या करें ? वह इन्सान नहीं है ?

§9§ राजस्थान में औसतन 400 प्रकरण रोजाना पुलिस थानों में दर्ज होते हैं । इनमें से 30 प्रतिशत प्रकरण झूठे होते हैं । पड़ौसी से बदला लेना है तो महिला से छेड़छाड़ का आरोप लगा दिया या बॉस से बदला लेना है तो अनुसूचित जाति/जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम का सहारा ले लिया जाता है । क्या यही हमारा चरित्र है ।

§10§ आधे से ज्यादा गवाह अदालत में अपने बयानों से मुकर जाते हैं । बताइए न्याय कैसे सुनिश्चित हो ।

§11§ महिला उत्पीड़न तथा दहेज हेतु विशेष अदालत के आंकड़े गवाह हैं कि केवल 18 प्रतिशत मामलों में ही दोषी को सजा मिल पाती है । बलात्कार के 80 प्रतिशत मामलों में तो स्वयं पीड़िता ही अपने बयानों से मुकर जाती है ? फिर भी हम पुलिस को कोस रहे हैं ? क्यों ?

§12§ बड़ी मेहनत से पुलिस किसी अपराधी को पकड़ती है अदालत उसे जमानत दे देती है । वह समाज में पुनः खुले आम दादागिरी करता है । जनता की नजर में तो पुलिस ही अपराधी को शरण दे रही है ?

§13§ भारतीय पुलिस को कोसने वालों को विदेशी पुलिस द्वारा दंगाइयों को घसीटने, पीटने तथा सबक सिखाने के दृश्य भी दिखाइए। क्या पुलिस

बदमाशों को भी पुकारने का कार्य करे ?

(14) मानवाधिकारों की दुहाई देने वाले कृपया बताएँ कि आतंकवादियों को किसके मानवाधिकारों की फिक्र है ।

(15) क्या भारतीय फिल्मों तथा अखबारों ने कभी पुलिस की छवि की चिन्ता की है ? कदापि नहीं । हर आदमी पुलिस से खौफ खाता है । सीकर शहर में हमने पुलिस की छवि पर एक सर्वे करवाया था, 90 प्रतिशत उत्तरदाता पुलिस को झूठ, निकम्मी तथा लुंजार मानते थे किन्तु उन्हें खुद कभी भी पुलिस से किसी तरह का वास्ता नहीं पड़ा था ।

(16) लोग अपने घरों में सुरक्षा उपाय नहीं अपनाते हैं । नौकर रखते हैं तो पूरी जानकारी नहीं लेते और न ही पुलिस को बताते हैं । वारदात हो जाने पर पुलिस को क्यों कोसते हैं ?

(17) पुलिस तथा सैन्य सेवाओं में अधिकांश जवान एवं निम्न स्तरीय कार्मिक गाँवों से आते हैं तथा उनका शैक्षिक स्तर भी कम होता है । अतः सेवाकालीन प्रशिक्षण के अभाव में इन जवानों (कॉन्स्टेबिल) का व्यवहार कई बार प्रायः आक्षेपनीय होता है । इसे भी सोचा जाए । जहाँ तक वेतन-भत्तों का प्रश्न है वह किसी भी पुलिसमैन का उसके कार्य की तुलना में सचमुच बहुत ही कम है । पुलिसकर्मी समय पर इच्छानुसार अवकाश भी नहीं ले पाते हैं ।

(18) जो लोग यह आरोप लगाते हैं कि पुलिस हफ्ता वसूली करती है, कृपया वे अपने गिरेबाँ में झाँक कर देखें कि उन्हें हफ्ता देना क्यों पड़ रहा है ? जाहिर है ऐसे लोग अतिक्रमण करे बैठे हैं या फिर किसी अन्य कार्यवाही से बचना चाहते हैं । यदि वे पाक-साफ हैं तो क्यों नहीं उच्चाधिकारियों से सम्पर्क करते हैं । यदि कोई व्यक्ति स्वर्ग देखना चाहता है तो उसका मरना भी आवश्यक है ।

(19) भारत में विडम्बना यह है कि देशभक्ति के नाम पर सीमाओं पर शहीद होना ही गिना जाता है । एक पुलिसकर्मी की शहादत को न तो सैन्य कर्मी जैसा सम्मान मिलता है न उसके परिवार को सुविधा । दिन रात गुण्डों, बदमाशों तथा आतंकवादियों से जूझता पुलिसकर्मी क्या उसका परिवार निरन्तर खतरे से घिरा रहता है । क्या समाज को इसकी चिन्ता है ?

(20) यह सर्वमान्य तथ्य है कि पुलिस दबाव में कार्य करती है इनदबावों में सर्वाधिक भारी दबाव झूठ राजनेताओं का होता है । पुलिस को कोसने वाले कृपया बताएँ कि इन नेताओं को चुनता कौन है ? लोगों को वैसी ही सरकार मिलती है जिस लायक वे होते हैं ।

तीन करोड़ श्रद्धालुओं के कुम्भ-मेले का आयोजन, सुधा दुर्लभजी की रिहाई तथा हैन्सी क्रोन्ये का सट्टेबाजी टेप क्या बहुत बड़ी सफलताएँ नहीं हैं ? मुझे जयपुर, होकर, दिल्ली में पुलिस से जब भी काम पड़ा, मैंने पुलिस को तत्पर तथा ईमानदार पाया । इसे क्या कहेंगे ? "पुलिस विज्ञान" सभा-संगोष्ठी, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पुलिस का पक्ष रखना मेरा कर्तव्य है, जो मैं निभा रहा हूँ । कृपया पुलिस-पब्लिक कार्यक्रम में यह मुद्दे भी तो सम्मिलित कीजिए ।

सादर

भवदीय

डॉ. सुरेन्द्र कटारिया

73/54 ए, मानसरोवर, जयपुर-20
(फोन - 2783871)

<u>प्रतिलिपि</u>

(1) श्रीमती अपर्णा वैश, दूरदर्शन केन्द्र जयपुर,
कृपया कार्यक्रम में दूसरा पक्ष भी सम्मिलित कीजिए ।

डॉ. सुरेन्द्र कटारिया